ISSN 2277-9264

संकल्प

हिन्दी अकादमी, हैदराबाद

जनवरी-मार्च, 2016

44 वर्षों से निरंतर प्रकाशित

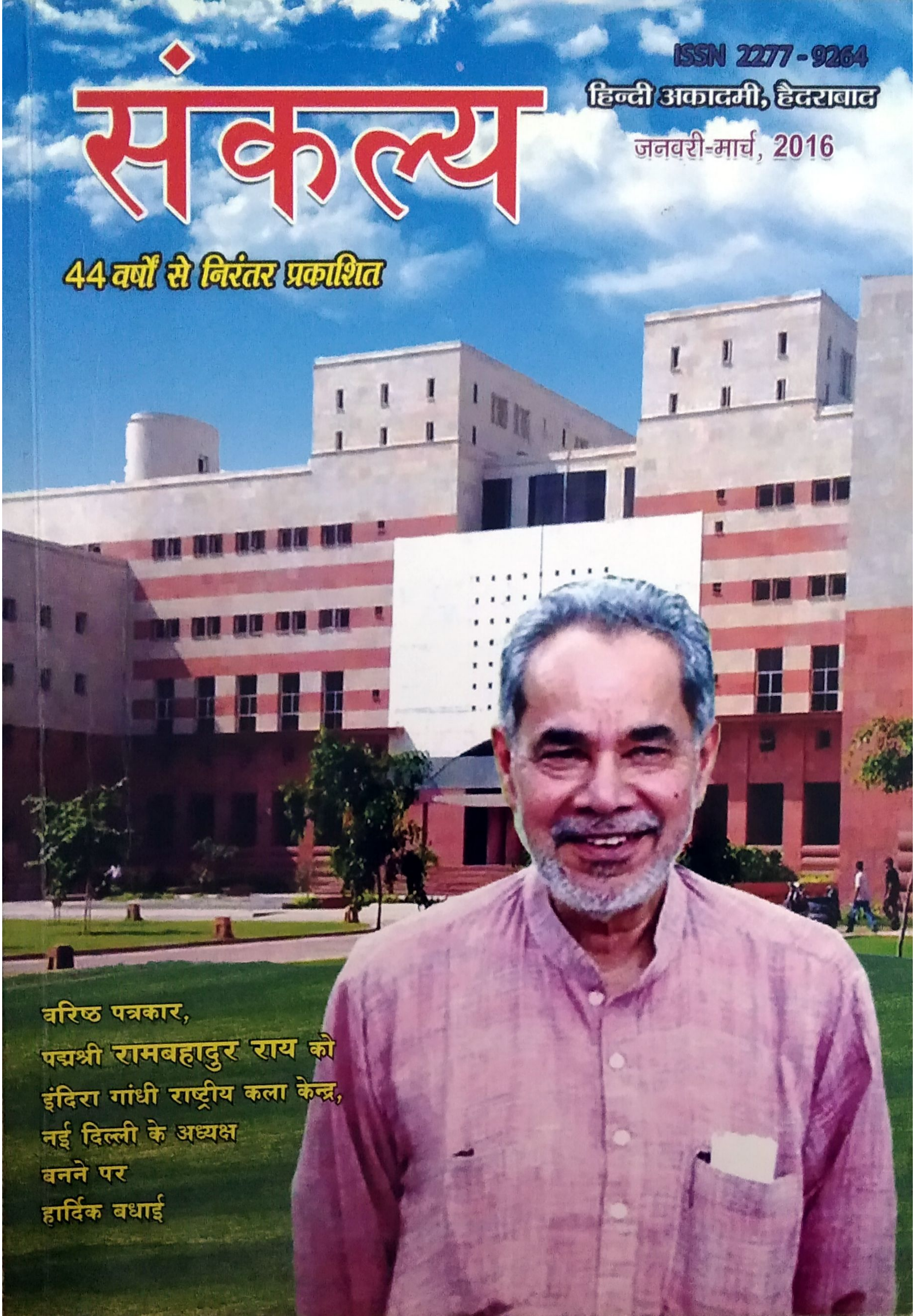

वरिष्ठ पत्रकार,
पद्मश्री रामबहादुर राय को
इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र,
नई दिल्ली के अध्यक्ष
बनने पर
हार्दिक बधाई

विषय-क्रम

संपादकीय

5	प्रो.टी.मोहन सिंह	-	विश्वविद्यालयों में राजनीतिक हस्तक्षेप : समस्याएँ और समाधान

जन्मदिन स्मरण

15	डॉ.गोरखनाथ तिवारी	-	दक्षिण हिंदी महासमर के अर्जुन : बदरीविशाल पित्ती जी

विशेष

22	प्रो.दिलीप सिंह	-	कहाँ-कहाँ से गुजर गया किताबों के बहाने

आलेख

32	डॉ.विवेकी राय	-	डॉ.वेदप्रकाश अमिताभ : समीक्षक व्यक्तित्व का निखार
39	मांधाता राय	-	सूर की रामकथा और मानस
47	प्रो.विजय कुलश्रेष्ठ	-	गत शती के महिला उपन्यास और परिवर्तित मनोवैज्ञानिक संदर्भ
52	डॉ.इसपाक अली	-	हिंदी कथा साहित्य में वृद्धा विमर्श
55	डॉ.सुनीति आचार्य	-	श्री कृष्ण-भक्ति में अवतारवाद की चेतना
60	डॉ.माधुरी पाण्डेय गर्ग	-	प्रेमचंद और शरतचंद्र के उपन्यासों में सामाजिक-संचेतना
64	डॉ.राजेश चंद्र पाण्डेय	-	निराला के नवगीत और संवेदना के विविध आयाम
67	कृष्ण कुमार यादव	-	प्रकृति का उल्लास पर्व है वसंत
71	सूर्यकांत त्रिपाठी	-	विद्यापति के काव्य में स्वरों की संगीतमयता
74	डॉ.किरण बाला अरोड़ा	-	वर्णभेद एवं श्री नरेश मेहता का काव्य शबरी
78	डॉ.अंजु लता	-	नासिरा शर्मा का कथा साहित्य : एक आलोचनात्मक अध्ययन
84	डॉ.विजय पाटील	-	हिंदी कहानी में मूल्य संक्रमण
88	डॉ.के.माधवी	-	अंतिम दशक के हिंदी नाटक-मानवीय मूल्य
91	डॉ.पार्वती	-	स्त्रीवाद और ओल्गा का साहित्य
95	लाङ्जम रोमी देवी	-	साधारण के असाधारण कविः मत्स्येंद्र शुक्ल
99	मुकेश कुमार	-	ज्ञानी देवी के काव्य में चित्रित प्रेम-भावना

विद्यापति के काव्य में स्वरों की संगीतमयता

डॉ.सूर्यकांत त्रिपाठी

संगीत स्वयं आत्मा की सहज अभिव्यक्ति है। संगीत में ही वह शक्ति है कि आराधक अपने आराध्य को सहज ही वश में कर लेता है क्योंकि स्वभावतः संगीत की धारा मधुर होती है, वह जीवन की शंकुल परिस्थितियों में दिव्य ज्योति का भी दर्शन कराती है और निष्क्रिय जीवन में सक्रियता का अमित उत्साह भर देती है। हम अपने काव्य का छंद शैलियों का वैविध्य जब देखते हैं तो संगीत-रुचि के नवनवोन्मेषशालिनी शक्ति का ही प्रभाव दृष्टिगोचर होता है। भावों में आकर्षण की सहज रमणीयता संगीत के द्वारा ही संपन्न होती है। यही कारण है कि हिंदी के आदि कवि के काव्य का आरंभ प्रकृति की सजह संगीत माधुरी के स्वर में प्रस्फुटित हुआ है। चंडिदास, विद्यापति, गोविंददास, सूरदास आदि ने काव्य की संगीतमयी साधना से ही अमृततत्व का प्रत्यक्ष किया है। कविवर विद्यापति की गीतमयता काव्य की अपूर्व चमत्कृति से मिलकर चैतन्य महाप्रभु जैसे साधक को भी वशीभूत करने में समर्थ हुई है।

इस प्रकार कवि विद्यापति के काव्य में अनंत चमत्कृतियों के साथ स्वरों की संगीतमयता ही भाषा में सप्राण आकर्षण का आधार बन गई है। विद्यापति में एक ओर युग-जीवन के निसर्ग सौंदर्य-प्रवाह की रसप्लाविनी झंकृति प्राप्त होती है तो दूसरी ओर दृश्यविधायिनी चमत्कृति का अपूर्व दर्शन भी प्राप्त होता है। काव्य और संगीत की सर्वरंजनकारिणी समन्विति का जो प्रकाश-वितरण इस अमर गायक ने किया है। उससे यौवन के चरममाधुर्य और वार्धक्य के चरम गांभीर्य की जीवनव्यापिनी श्रुति प्राप्त होती है। संगीत की तरंगों की तन्मयतापूर्ण समाधि में नारी की रूप माधुरी का अनुपम प्रत्यक्ष है। भावुकता और कल्पना का अद्‌भुत समन्वय निम्नवत् देखा जा सकता है-

"चाँद-सार लए मुख घटना करू,/लोचन चकित चकोरे।
अमिय धोय आँचर धनि पोछलि,/दह दिपि भेल उँजोरे।"[1]

एक ओर पुरुष हृदय की तरल अतृप्ति का चिरंतन भावावेश संगीत की मादक लहरों में अद्‌भुत मोहकता के साथ इस रूप में श्रवणगत होता है-

"सजनि, भल कए पेखल न भेल।/मेघ माल सयँ तड़ितलता जनि,
हृदय सेल दइल गेल।"

दूसरी ओर नारी-सृष्टि की अनन्य आत्मीयता की उपलब्धि का निश्छल अनुराग भी सुनाई देता है-

"की लागि कौतुक देखलौ सखि,/निमिख लोचन आध।
मोर मन-मृग मरम बेघल,/विषम बान बेआध।"

भावना के चरम-दिव्य भावावेश को तरंगायित करने में विद्यापति की कला द्रुत-हृदयस्पर्शिनी है-

ISSN : 2321-6131

वर्ष:3 अंक:5-7 जून, 2016

समवेत

साहित्य, संस्कृति एवं शिक्षा से संबद्ध
अर्द्धवार्षिक शोध पत्रिका

भारतीय भक्ति साहित्य विशेषांक

संपादक
डॉ. नवीन नन्दवाना

अनुक्रम

1. भक्तिकाल : पुनर्विचार की जरूरत 1
   - प्रभात कुमार मिश्र

2. मध्ययुगीन भक्ति आंदोलन और दक्षिण 8
   - सूर्यकांत त्रिपाठी

3. आज का सामाजिक-सांस्कृतिक परिदृश्य और कबीर 12
   - सौरभ कुमार

4. संत दादूदयाल : जीवन, पंथ और भक्ति पद्धति 18
   - नवीन नंदवाना

5. संत कवि सुंदरदास : व्यक्तित्व और जीवन मूल्य 31
   - अखिलेश चास्टा

6. संत रैदास के काव्य में सामाजिक चेतना 40
   - सुभाष चंद्र नंदवाना

7. रामस्नेही संत काव्य : आध्यात्मिक और सामाजिक सरोकार 46
   - महेश चंद्र तिवारी

8. संत जम्भेश्वर के चिंतन की वर्तमान समय में प्रासंगिकता 56
   - रामरती माँजू

9. संत कवियों की सामाजिक समरसता और मलूकदास 69
   - रंजना उपाध्याय

10. संत दुर्बलनाथ के काव्य में सामाजिक चिन्तन 74
    - सुरेश सिंह राठौड़

11. भक्ति आन्दोलन में राजस्थान की संत राणी रूपांदे का योगदान 87
    - भूमिका द्विवेदी एवं मदन सिंह राठौड़

मध्ययुगीन भक्ति आंदोलन और दक्षिण

सूर्यकांत त्रिपाठी*

साहित्य में काल का निर्धारण समय सापेक्ष नहीं होता इस बात को दृष्टि में रखते हुए जब हम अपनी बात को आगे बढ़ाते हैं तो स्वर्गीय विद्यानिवास मिश्र की यह उक्ति बड़ी सार्थक प्रतीत होती है- ''साहित्य में युग का निर्धारण इस आधार पर नहीं होता कि अमुक तारीख से अमुक तारीख तक यह युग माना जाए, क्योंकि साहित्य के इतिहास का संबंध किसी के सिंहासन पर बैठने से या किसी के मरने से नहीं होता। साहित्य का इतिहास बनता है, प्रवृत्तियों से। कुछ अपने युग के आगे जाती है, कुछ प्रवृत्तियाँ अपने युग के पीछे जाती हैं, कुछ प्रवृत्तियाँ युग में सम्पृक्त रहती हुई भी युग को आगे नहीं बढ़ातीं। इसीलिए साहित्य के इतिहास में किसी युग का नाम उस प्रवृत्ति के आधार पर पड़ता है, जो अपने युग में रहती भी है और उसके आगे भी जाती है। भक्ति युग ऐसा ही युग है जो एक खुले वृत्त के रूप में है, उसकी कोई परिधि निश्चित ही नहीं की जा सकती है।''[1] तो भी हिंदी भक्ति आंदोलन को जाँचने और परखने के लिए आठवीं सदी से पन्द्रहवीं सदी का धार्मिक साहित्य विशेष महत्वपूर्ण है।

कमोवेश आठवीं सदी से हिंदी भक्ति आंदोलन की सुगबुगाहट शुरू हो गयी थी। समूचे देश में लोक और शास्त्र का समन्वय होने लगा था। इस प्रकार भाषिक और वैचारिक दोनों ही दृष्टियों से संपूर्ण भक्ति आंदोलन लोक की ओर अभिमुख हो चला था। संस्कृत का स्थान जनभाषाएँ लेने लगी थीं। इस आंदोलन का मात्र धार्मिक ही नहीं बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक महत्व भी था। सामाजिक दृष्टि से यह न्याय और

* एसोसियेट प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष, हिन्दी विभाग, तेजपुर विश्वविद्यालय, तेजपुर, नप्पम-784028 (असम)

ISSN : 0975-3664 RNI : U.P.BIL/2012/43696

Year : 2016 Year : June Vol. : 2

शोध - धारा

SHODH-DHARA

A

Peer Reviewed

Quarterly Research Journal

of Humanities and Social Sciences

Grade 'A' Impact Factor 5-10

शैक्षिक एवम् अनुसंधान संस्थान, उरई-जालौन (उ०प्र०) द्वारा प्रकाशित

Published by Shakshik Avam Anusandhan Sansthan

Orai (Jalaun) U.P.

RNI : U.P.BIL/2012/43696

ISSN : 0975-3664

शोध - धारा
SHODH-DHARA

(मानविकी एवं समाज विज्ञान पर केंद्रित पीयर रिव्यूड त्रैमासिक शोध–जर्नल 'ए' ग्रेड प्राप्त)
(A peer reviewed Quarterly Research Journal of Humanities & Social Sciences with 'A' Grade)

Year 2016 Jun 16 Vol. 2

अनुक्रम Contents

शीर्षक	लेखक	पृ०सं०
शोध आलेख		
✦ हिन्दी		१-७१
१. जनपद मीरजापुर के आदिवासी और करमा	डॉ० सूर्यकांत त्रिपाठी	1-6
२. छायावाद के युग प्रवर्तक–मुकुटधर पांडेय	कु० स्नेहा पाण्डेय डॉ० अंजनी पाठक	7-10
३. विद्यापति एवं जयदेव के गीतिकाव्य में कृष्ण का स्वरूप	डॉ० आनन्द पाण्डेय	11-18
४. जनपदीय कविता में बघेली काव्य वैभव का दस्तक	डॉ० नरेन्द्र मिश्र	19-28
५. संत काव्य धारा में रज्जबदास जी का स्थान	डॉ० शुचि अग्रवाल	29-32
६. मिथक और काव्य–भाषा : अन्तःसम्बन्ध	डॉ० माधुरी गर्ग	33-42
७. अमृतलाल नागर का उपन्यास 'नाच्यौ बहुत गोपाल' : : नारी मन का जीवंत दस्तावेज	डॉ० कामिनी साहिर	43-56
८. महिला सशक्तिकरणःप्रवृत्तियाँ एवं मुद्दे	डॉ० रीतू भटनागर	57-59
९. मालती जोशी के उपन्यासों में स्त्री	डॉ० गोरखनाथ तिवारी	60-68
१०. डॉ. गिरिराज शरण अग्रवाल का व्यंग्य साहित्य	डॉ० संजीव कुमार वर्मा	69-71
✦ अंग्रेजी		७२-७८
११. Sublimation of Love	Dr. Anupam Gond	72-75
१२. Mythical Speculations in the poetry of Sri Aurobindo	Dr. Shipra G.Vashishtha	76-78
✦ संस्कृत		७९-९४
१३. श्रीमद्भागवत और अष्टाङ्ग योग–एक समीक्षात्मक दृष्टि	डॉ० मनीष पाण्डेय	79-83
१४. शब्दशक्ति शब्दबोधश्च	डॉ० कृपाशंकर मिश्र	84-89
१५. अभिज्ञानशाकुन्तलम् में प्रकृति–विन्यास	डॉ० संतोष कुमार पाण्डेय	90-94
✦ इतिहास		९५-१०६
१६. भारत में प्राचीनकाल में विज्ञान एवं उसकी प्रयोगशालाएं	डॉ० अश्विनी यादव	95-99
१७. मसीही धर्म से प्रभावित हिन्दू धर्म	डॉ० रमा गुप्ता	100-106
✦ गृहविज्ञान		१०७-१२३
१८. A study of Nutritional Status of Scheduled Caste	Dr. Arati Pandey	107-112

हिन्दी

ISSN : 0975-3664, RNI : U.P.BIL/2012/43696
SHODH-DHARA ; June 2016; Vol. 2; P. 1-6

जनपद मीरजापुर के आदिवासी और करमा

डॉ0 सूर्यकांत त्रिपाठी

एसोसिएट प्रोफेसर व अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, तेजपुर विश्वविद्यालय, तेजपुर (असम)

(प्राप्त : ११ जनवरी २०१६)

Abstract

मीरजापुर के आदिवासियों की भाषा स्थानीय बोलियों से प्रभावित है। उसमें मध्यप्रदेश, बिहार और उत्तर प्रदेश की बहुत–सी बोलियों का घाल–मेल है। यहाँ लगभग ६२ प्रतिशत बिहारी बोली जाती है जिस पर पश्चिमी भोजपुरी का प्रभाव अधिक है। सोनपार के आदिवासी अधिकांश पश्चिमी हिंदी से प्रभावित बघेली बोलते हैं लेकिन सुदूर दक्षिण में 'कोलवरियन' परिवार के मुण्डाओं की 'कोरवारी' भी बोली जाती है। इनकी कोई लिपि नहीं मिलती। इनका सारा लोक साहित्य कंठगत है जो इनके जीवन को सदैव जीवन्त बनाये है।

इनका जीवन विश्वास–अंधविश्वास, आमोद–प्रमोद, धार्मिक–भावना, भय–निभर्य और सुख–दुःख से ओत–प्रोत है। अपने जीवन के साथ ये प्राकृतिक उपादानों के प्रति अधिक भाव–प्रवण हैं। इन्हीं प्राकृतिक उपादानों से ये जीवन जीते आ रहे हैं। ये प्रंकृति की अनुकूलता पर उसे दैवत्व प्रदान कर श्रद्धा–भाव प्रदर्शित करते और प्रतिकूलता पर भयातुर होते रहे हैं, जिनका यथारूप वर्णन इनके गीतों में मिलता हैं।

Figure : 00 **References : 16** **Table : 00**

Key Words : मीरजापुर के आदिवासी, प्राकृतिक संपदा और आदिवासी, कलागीत

प्राकृतिक संपदाओं, ऐतिहासिक, राजनैतिक, आर्य–अनार्य संस्कृति और औद्योगिक प्रतिष्ठानों से समृद्ध उत्तर प्रदेश का विशिष्ट जनपद मीरजापुर तो संप्रति मीरजापुर और सोनभद्र जैसे दो जनपद में विभक्त हो गया है। २४–२५ अक्षांश तथा ८३.४८ देशान्तर के बीच स्थित है। इसके उत्तर में वाराणसी–जौनपुर, पूरब में शाहाबाद (बिहार), पश्चिम में इलाहाबाद और दक्षिण में पलामू (सरगुजा) तथा रीवाँ जनपद है। इसका क्षेत्रफल लगभग ४२८३.४ वर्ग मील है।

यहाँ कर्णावती, औझला, जरगो, रेड़, बिजुल, कनहर, पांगन, किरमा, बेलन, करमनासा, गरई, गंगा, सोन प्रभृति छोटी–बड़ी नदियाँ हैं। जिनका अपना ऐतिहासिक, भौगोलिक एवं सांस्कृतिक महत्व है। इनमें गंगा और सोन प्रमुख हैं। सोन का प्राचीन नाम 'शोण' है। पुराणों में 'शोणभद्र' नाम से इसका उल्लेख है। हर्षचरित में बाणभट्ट ने इसे 'हिरण्यवाह' जैसी संज्ञा दी है–

'अपत्ये हिरण्यवाह नामानां महानदं, यं जनाः शोण इति कथयन्ति।''

आदिवासी लोकगीतों में सोन का वर्णन प्राप्त होता है–

''किला त ऽ बखानउँ अगोरी क ऽ किला, हे किला तरे सोन बहि जाय।''

सोन के दक्षिणी तट से जनपद की दक्षिणी सीमा पर्यन्त का भाग जिसके अंतर्गत चोपन, डाला, ओबरा, पीपरी, म्योरपुर, बभनी, बचरा, दुद्धी, महुली, बिंढमगंज प्राकृतिक संपदाओं से सम्पन्न आदिवासियों के प्रमुख क्षेत्र हैं।

लालगंज और हलिया में कोलों की संख्या अधिक है, राबर्ट्सगंज तथा घोरावल में गोड़, धांगर

ISSN 2231 – 413X

A Multidisciplinary Quarterly International Refereed Research Journal

SHODH PRERAK

A Multidisciplinary Quarterly International Refereed Research Journal

http://shodhprerak.blogspot.com

Vol. - VI, Issue - 3, July, 2016

Chief Editor :
Dr. Shashi Bhushan Poddar

Editors :
Reeta Yadav
Pradeep Kumar

- बिम्ब-विधान की दृष्टि से आधुनिक संस्कृति कवियों की नवचेतना 153-155
  जनेश्वर मिश्र, शोधच्छात्र, संस्कृत-विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद
- काशी की सांस्कृतिक भौगोलिक स्थिति एवं कला : एक अध्ययन 156-160
  डॉ. नागेन्द्र कुमार सिंह, विभागाध्यक्ष, पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग, जनसम्पर्क अधिकारी, इ. गाँ. रा. जनजातीय विश्वविद्यालय, अमरकंटक
- उत्तर प्रदेश में लगान बन्दी आन्दोलन एवं कांग्रेस 1930-1934 161-170
  रामू, पाश्चात्य इतिहास विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ।
- अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की अन्तर्जातीय विवाह के प्रति दृष्टिकोण 171-175
  डॉ. संजय कुमार पाठक, प्रवक्ता, समाजशास्त्र, नागरिक पी.जी. कॉलेज, जंघई, जौनपुर
- अथर्ववेद में प्रतिपादित इन्द्रजाल 176-178
  सुनील कुमार शाह, वरिष्ठ शोध छात्र, संस्कृत विभाग, कला संकाय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी
- वाचिक कविता में राम 179-182
  डॉ. सूर्यकांत त्रिपाठी, एसोसिएट प्रोफेसर व अध्यक्ष, हिंदी विभाग, तेजपुर विश्वविद्यालय, तेजपुर (असम)।
- राष्ट्रीय आन्दोलन में महिलाओं की भूमिका 183-185
  अमरेन्द्र सिंह, शोधछात्र (शिक्षाशास्त्र विभाग), सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी
- अज्ञेय के रचनात्मक आयाम 186-188
  राम आशीष तिवारी, शोध छात्र, हिन्दी विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी।
- महाकविकालिदासकाव्येषु गुणविषयकाः स्त्रीविषयकाश्च लोकोक्तयः 189-191
  डॉ. पवनकुमारपाण्डेयः, स्नातकोत्तरसाहित्याध्यापकः, श्रीरणवीरसंस्कृतविद्यालयः, काशीहिन्दूविश्वविद्यालयः, वाराणसी
- कालिदास जी के काव्यों में नायक का सौन्दर्य 192-193
  डॉ. संजीत तिवारी, महम्मदपुर, छपरा, बिहार
- संविधान में राजभाषा हिन्दी की स्थिति और व्यावहार्यता 194-196
  कीर्ति त्रिपाठी, एम.फिल., हिन्दी विभाग, महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी
- समानान्तर सिनेमा और समाज 197-201
  अभिषेक मिश्र, शोध छात्र (हिन्दी विभाग), महात्मा गाँधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय, चित्रकूट-सतना (मध्य प्रदेश)
- संस्कृत काव्यों में आपत्प्रबन्धन 202-204
  डॉ. आरुणेय मिश्र, अतिथि प्रवक्ता ई.सी.सी. इलाहाबाद
- भारतीय राजनीति में महिला नेतृत्व : एक समीक्षात्मक अध्ययन 205-207
  डॉ. हरेराम सिंह, एसोसिएट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान, देवेन्द्र पी.जी. कॉलेज, वेल्थरा रोड, बलिया (यू.पी.)
- यमुना बेसिन गढ़वाल हिमालय की समाज व्यवस्था 208-212
  डॉ. कमलेश कुँवर, सहायक अध्यापक, सामाजिक विज्ञान, राजकीय इण्टर कॉलेज, केदारूखाल, जनपद चमोली, उत्तराखण्ड

वाचिक कविता में राम

डॉ. सूर्यकांत त्रिपाठी *

राम भारतीय संस्कृति के साहित्य के प्राण–पुरुष हैं। वे पुराण–पुरुष भी हैं, इतिहास–पुरुष भी हैं पर उनकी यह स्थिति गौण है। लोक में, लोक साहित्य में विशेषकर वाचिक परंपरा से आये लोकगीतों में राम प्रतीक हैं, बिम्ब हैं, मिथ हैं, पर लोक में उनका जो सबसे महत्वपूर्ण रूप है वह है उनकी मूर्तिमान् उपस्थिति। उनकी प्रमुख स्थिति है सदैव उपस्थित रहना, हर साँस में उपस्थित रहना, जांघों में उपस्थित रहना, गीतों में उपस्थित रहना, कानों में उपस्थित रहना, आँखों में उपस्थित रहना और अपनी उपस्थिति के साथ लोक की जीवन–यात्रा का सहयोगी बने रहना।

लोक–मंगल की दृष्टि से देखें, तो भी जो राम के भाव से भावित नहीं हैं वह शुभ नहीं है। मित्र–मित्र, परिजन–परिजन, प्रिय–प्रिय सभी रिश्ते–नाते इसीलिए हैं कि राम वहाँ हैं। राम वहाँ नहीं है तो घर श्मशान है, भूतों का डेरा है, दोस्त दुश्मन है, अपने पराये हैं। मंगल की स्थिति राम की मौजूदगी है। जहाँ राम की मौजूदगी नहीं है, वहाँ सभी सुख और ऐश्वर्य के साधन होने के बावजूद नष्ट हो जाते हैं। राम की गैरमौजूदगी की जानकारी पाप की सही जानकारी है। इसीलिए लोक और लोक की वाचिक कविता एक ऐसे अपनाव की कविता है, गीत है, जिस अपनाव की धुरी राम हैं। वस्तुतः इसीलिए यह अपनाव है, यहाँ परायेपन के लिए कोई जगह नहीं है। दशरथ की चिंता, दशरथ की ग्लानि लोक की चिंता है, लोक की ग्लानि है–

सूतल राजा उठि बइठेले, डोमिनी जगावेले हो।
ए डोमिनी, देइ दऽ नाझाँझर तमरुआ, अहेर खेले जाइबि हो।।
सूतल डोमिनी उठि बइठेली, डोम के जगावेली हो।
ए डोम देखली निरबंसिया केरा मूँह, कुसल नाहीं परेला हो।।
अतना बचन राजा सुनलनि, सुनहू ना पावेले हो।
ए रानी जुठवा के पतरी डोमिनिया, निरबंसिया नउआँ धरेले हो।।

सबेरे–सबेरे उठते ही डोमिन ने निःसंतान राजा का मुँह देख लिया। उसने अपने डोम से कहा कि आज सबेरे मैंने निःसंतान राजा का मुँह देखा है, इसलिए कुशल नहीं है। डोमिन की यह बात सुनकर राजा को बहुत दुःख होता है और वह रानी से कहते हैं कि जूठा पत्तल उठाने वाली डोमिन ने मुझे निरवंशी कहा है। चूँकि लोक में राम मूर्तिमान सहायक हैं। उन्हें सबकी मदद करनी है, सबकी साध पूरी करनी है, सबकी चाह रखनी है और सबको ताना–मेहना से निजात दिलानी है। हर निरवंशी की वंशवृद्धि करनी है तथा हर निपूती की सूनी कोख भरनी है, लोकापवाद से बचाना है और राम, जन्म लेकर वही करते हैं–

रानी, फाँड़े बान्ही लिहलीं तिल चाउर, अदिति मनावेली हो।
ए आदित, हम पर होइँ न देयाल, डोमिनिया बिरही बोलेले हो।।
घरी रात गइले पहर राति, अवरू पहर राति हो।
ए ललना, बाजे लागल अवध बधावा, महलिया उठे सोहर हो।।

डोमिनी की निरवंशी संज्ञा ने रानी को गहरी चोट पहुँचाई। उन्होंने सूर्य से प्रार्थना की, 'हे सूर्यदवे ! मुझ पर कृपा करें, मुझे संतान दें।' सूर्यदेव की कृपा के फलस्वरूप राम जन्म लेते हैं, घर में आनन्द की बधाई बजने लगती है, सोहर की मंगल ध्वनि गूँजने लगती है।

दुअरा जे बाम्हन पोथी बाँचे, अँगना भाँटिन नाचे ले हो।
आरे, लट खोलि नाचेले डोमिनिया, बधइया हम लेबो हो।।
अतना वचन राजा सूनेले, सुनहिं न पावेले हो।

---

* एसोसिएट प्रोफेसर व अध्यक्ष, हिंदी विभाग, तेजपुर विश्वविद्यालय, तेजपुर (असम)।

सम्मेलन पत्रिका

(शोध-त्रैमासिक)

भाग : १०१ संख्या ३
आषाढ़-भाद्रपद : संवत् २०७३
जुलाई-सितम्बर : सन् २०१६

प्रधान सम्पादक
विभूति मिश्र

सम्पादक
राम किशोर शर्मा

उप सम्पादक
नन्दल हितैषी

हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग
१२ सम्मेलन मार्ग, इलाहाबाद-३

ISSN : 2278-1773

प्रकाशक

विभूति मिश्र

प्रधानमंत्री

हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग

१२ सम्मेलन मार्ग, इलाहाबाद-३

दूरभाष (कार्यालय) — ०५३२-२५६४१९३

सम्मेलन पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचारों तथा प्रस्तुत किये गये तथ्यों से प्रकाशक व सम्पादक की सहमति आवश्यक नही। इसका पूर्ण उत्तरदायित्व लेखक का होगा।

एक प्रति का मूल्य : ७० रु०

वार्षिक मूल्य : २५० रु०

विदेश के लिए वार्षिक मूल्य : २० डालर (डाक व्यय अतिरिक्त)

वार्षिक सदस्य बनने के लिए २५०.०० रु० का ड्राफ्ट या पोस्टलआर्डर 'प्रधानमंत्री, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, १२ सम्मेलन मार्ग, इलाहाबाद-३' के नाम भेजें। कृपया चेक व मनिआर्डर न भेजें।

मुद्रक

रंजन इण्टरप्राइजेज

जी-२०६, ओझा काम्प्लेक्स (सचान नर्सिंग होम के सामने), इलाहाबाद (उ०प्र०)

१४.	हिन्दी निर्गुणी संत और उनका साहित्य	ब्रजेन्द्र कुमार सिंहल	११३-१२५
१५.	भोजपुरी लोकगीत : बनावट-बुनावट	डॉ० सूर्यकांत त्रिपाठी	१२६-१२८
१६.	भक्ति आन्दोलन का समाजार्थिक परिप्रेक्ष्य और दादूदयाल की काव्य-संवेदना	डॉ० राम विनय शर्मा	१२९-१३७
१७.	''काव्य में शब्द चित्रों की उपस्थिति कवि-चित्रकार जगदीश गुप्त के संदर्भ में''	डॉ० अर्चना द्विवेदी	१३८-१४२

विविधा

१८.	भोजपुरी लोकगाथा 'लोरिकायन' की प्रासंगिकता	डॉ० अर्जुनदास केसरी	१४३-१५०
१९.	वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली निर्माण की आवश्यकता	डॉ० दिनेश मणि	१५१-१५५
२०.	भारतीय नाट्यकला और रंगमंच	डॉ० पृथ्वीनाथ पाण्डेय	१५६-१६१

समीक्षा

२१.	'लालटेन' की ग्यारह कहानियाँ	डॉ० अखिलेश कुमार	१६२-१७१
२२.	''यथार्थ गंगा''	चन्द्रगुप्त प्रसाद वर्मा 'अंकिचन'	१७२-१७६
२३.	प्रशंसनीय प्रतीक महाकाव्य 'भक्ति निधान'	डॉ० सुशील कुमार पाण्डेय 'साहित्येन्द्र'	१७७-१८०
२४.	व्यवस्था और पूँजी का तिकड़मः समकालीन प्रतिबद्ध साहित्य	डॉ० शिव प्रसाद शुक्ल	१८१-१८४

भोजपुरी लोकगीत : बनावट-बुनावट

डॉ० सूर्यकांत त्रिपाठी

भोजपुरी लोकगीतों की परंपरा मुख्यतः मौखिक है। गाँवों में हजारों गीत मात्र कंठगत ही है। इन गीतों की भाषा शिष्ट और साहित्यिक भाषा न होकर साधारण जन की भाषा है उसकी वर्ण्य-वस्तु भोजपुरी लोकजीवन में गृहीत भावों और प्रभावों तक ही सीमित है और उसकी रचना में व्यक्ति नहीं समूचे समाज का समवेत योगदान है। यही कारण है कि भोजपुरी लोकगीतों पर व्यक्ति की छाप न होकर समग्र व्यक्ति-लोक की छाप है। ये गीत निर्वैयक्तिक हैं। ये समूह द्वारा रचे जाते हैं। यही कारण है कि इनमें व्यक्तित्व का अभाव तथा समूह अथवा जाति विशेषताओं के लक्षण उपलब्ध होते हैं।

भोजपुरी लोकगीतों के बनावट-बुनावट का पहला स्तर है- पुनरावृत्ति और प्रश्नोत्तर क्रम। इन पुनरावृत्तियों के कई स्तर हैं। उदाहरण के तौर पर शब्द या शब्द-समूहों की पुनरावृत्ति। ये शब्द या शब्द-समूह या तो लोक परंपरा से गृहीत मांगलिक विशेषणवाची होते हैं या केन्द्रभूत अर्थ के व्यंजक होते हैं। जब कोई पात्र किसी प्रश्न का उत्तर देता है तो प्रश्न में प्रयुक्त शब्दों का और उसके विशेषणों का ज्यों का त्यों उत्तर में अनुवाद करते हैं। जैसे प्रसंग है-

''कहाँ पइबो सोने केरा छुरवा त कहाँ पइबों धगरिन हो
के मोरा जागी रयनिया त के हो दुख बँटिहन हो।
बन से निकलि बनसपती सितहिं समुझावेली हो
चुप रहु बहिनी त चुप रहु हो, बहिनी।
हम देबो सोने केरा हुरिया, हमहिं होबइ धगरिन हो
सीता, हम तोरा जागब रयनिया, हमहिं दुख बाँटबि हो।'[१]

यह इसलिए किया जाता है कि अर्थ की स्पष्टता में कोई व्यवधान न हो। इसी प्रकार थाली हो तो सोने की ही हो, चौकी हो तो चंदन की हो, अटारी हो तो ऊँची ही हो, घोड़ा हो तो नीला ही हो, डोरी हो तो रेशम की हो, सेज हो तो बेले की कलियाँ वहाँ बिछी हों। ऐसे जोड़ों की पुनरावृत्ति अर्थ की स्पष्टता और लोक साहित्य की परम्परा की स्मृति के लिए की जाती है। तीसरे प्रकार की पुनरावृत्ति सामाजिक और आध्यात्मिक कारणों से होती है। उदाहरण के लिए सात भाइयों के बीच एक बहन का होना, प्रिय के विदेश जाने पर बारह बरस तक एकतान प्रतीक्षा करना, ननद-भौजाई और सास-बहू के बीच विरसता की कल्पना, भाई-बहन के निश्छल स्नेह की रचना, पुत्र की पुत्री से अधिक महत्व, अधर्म के ऊपर धर्म की विजय, तीन की संख्या का महत्व, अपनी खुशी में सबको सहभागी बनाने का उत्साह और अपने दुःख में प्रकृति को सहानुभूति देखने की शक्ति-ये अभिप्राय ऐसे मर्मभूत सत्य के रूप में गृहीत हुए है कि उनमें एक न एक पर बात छिड़ी ही रहती है।

दूसरा स्तर है अनपेक्षित कथांस का परिहार और मर्मभूत कथांश का मर्म-विन्यास। लोक मानस के कौतूहल की सीमा को परखते हुए इन गीतों में उन अंशों को छोड़ दिया जाता है जो अंश अपने आप गम्य होते है, 'उदाहरण के लिए यह सोहर लिया जा सकता है-

''छापक पेड़ छिउलिया त पतवन गहबर हो
तेहि तर ठाढ़ि हरिनिया त मन अति अनमन हो।

ISSN : 2760-X790

शोध भारती

त्रैमासिक पत्रिका

(An International Refereed Research Journal)

Vol.-I Issue-1
August-October 2016

सम्पादक

डॉ. हरीश कुमार

डॉ. आशुतोष त्रिपाठी

17. गाँधी जी की सर्वोदय आर्थिक नीति एवं उसकी वर्तमान परिस्थितियों में प्रासंगिकता 92–101

डॉ0 मनीषा सिंह

18. काशीनाथ सिंह के उपन्यास और शैली–संदर्भ 102–107

डॉ0 सूर्यकांत त्रिपाठी

19. धूमिल की काव्यभाषा : सम्प्रेषण का अद्भुत सामर्थ्य 108–113

शिव प्रताप सिंह

20. अद्वैत वेदांत में प्रतिपादित प्रत्यक्ष विचार का स्वरूप 114–117

अमरनाथ सिंह

21. दूधनाथ सिंह की कहानियों में आधुनिकताबोध 118–123

दीपक सिंह

22. श्रीमद्भगवद्गीतोक्त योगवैशिष्ट्य 124–129

विष्णु शंकर पाण्डेय

23. निम्बार्क मत में सृष्टि-प्रक्रिया 130–136

शेफाली प्रियदर्शिनी

24. कृष्णकुतूहलम् नाटक में प्रतिबिम्बितप्रकृति–चारुता 137–141

मनोज कुमार उपाध्याय

25. वेदों में प्रतिपादित कोश एवं कर स्वरूप 142–148

धीरज कुमार मिश्र

26. गोपालगंज जिले के उत्खनित एवं पूर्व सर्वेक्षित पुरास्थलों का पुरातात्त्विक अध्ययन 149–153

अशेष मिश्र

काशीनाथ सिंह के उपन्यास और शैली–संदर्भ

डॉ.सूर्यकांत त्रिपाठी*

काशीनाथ सिंह के उपन्यास प्रायः संस्मरणात्मक है और संस्मरण विधा का आरम्भ द्विवेदी युग से हुआ है। पदुमसिंह शर्मा के लिखे संस्मरणों से इसकी शुरूआत समझी जानी चाहिए। संस्मरण का शाब्दिक अर्थ सम्यक् स्मरण करना होता है। इसमें रचनाकार किसी घटना, वस्तु या व्यक्ति से जुड़े हुए अनुभवों को कलात्मक ढंग से प्रस्तुत करता है। स्मरणीय व्यक्ति कोई पुरुष ही होता है। अतः अतीत की हृदयस्पर्शीय स्मृतियों में अजीब किस्म का जादू है जो भाव विभोर करने की क्षमता रखता है। गद्य की विधा होने पर भी स्मरण लेखन काव्य की रमणीयता से ओतप्रोत और रससिक्त होता है। इस विधा के रचनाकारों में महादेवी वर्मा, रामवृक्ष बेनीपुरी, शांतिप्रिय द्विवेदी, जगदीशचंद्र माथुर, कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर, देवेन्द्र सत्यार्थी, इलाचंद्र जोशी, गुलाबराय, सेठ गोविन्ददास आदि प्रमुख है।

रामचंद्र तिवारी का यह अभिमत है कि "संस्मरण किसी स्मर्यमाण की स्मृति का शब्दांकन है। स्मर्यमाण के जीवन के वे पहलू, वे संदर्भ और वे चारित्रिक वैशिष्ट्य जो स्मरण करता को स्मृत रह जाते हैं, उन्हें वह शब्दांकित करता है। स्मरण वही रह जाता है जो महत्, विशिष्ट, विचित्र और प्रिय हो। स्मर्यमाण को अंकित करते हुए लेखक स्वयं भी अंकित होता चलता है। संस्मरण में विषय और विषयी दोनों ही रूपायित होते है। इसलिए इसमें स्मरणकर्ता पूर्णतः तटस्थ नहीं रह जाता।"[1]और पंडित विद्यानिवास मिश्र का मानना है कि "स्मृति–लेख ऐतिहासिक दस्तावेज नहीं है, पर स्मृति का विशिष्ट सर्जनात्मक उपयोग है, समकालीन साहित्य के इतिहास को एक नया चौखटा इस लेखा से मिलता है और इस दृष्टि से यह इतिहास–रचना को एक नया आयाम देता है। यह इसकी एक गौण उपलब्धि है। इसकी मुख्य उपलब्धि तो यह है कि लेखक,लेखक को कैसे देखता है––बस इस देखने को आप देखते रहे : आपकी आँखे नम हो जायेंगी।"[2]

अपना मोर्चा, काशी का अस्सी, और रेहन पर रग्घू काशीनाथ सिंह के इन तीन संस्मरणात्मक उपन्यासों को शैली की दृष्टि से देखने का प्रयास इस आलेख में किया गया है। चूँकि शैली के विभिन्न रूपों के कारण ही भाषा का सौष्ठव परिलक्षित होता है और शैली वैशिष्ट्य के द्वारा ही इच्छित भावों तथा विचारों का स्पष्टता एंव प्रभावोत्पादकता से प्रकटन संभव है। परिस्थिति–संदर्भ

---

* एसोसिएट प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग, तेजपुर विश्वविद्यालय, तेजपुर, असम।

ISSN 2277 - 9264

संकल्य

हिन्दी अकादमी, हैदराबाद
अक्तूबर-दिसंबर, 2016
44 वर्षों से निरंतर प्रकाशित

'सोनामाटी' के सोना : डॉ. विवेकी राय

ISSN 2277-9264 RNI No. 25388/74

संकल्य त्रैमासिक

वर्ष : 44 * अंक : 4 * अक्तूबर-दिसंबर, 2016 ई.

अनुक्रम Contents

संपादकीय

5 प्रो.टी.मोहन सिंह/ गाँवों के हितैषी रचनाकार डॉ.विवेकी राय अब नहीं रहे...

विवेकी राय पर विशेष

8 डॉ.एम.डी.सिंह/मत रो

9 विनय कुमार शुक्ल 'विद्रोही'/स्वर्गीय विवेकी राय जी को समर्पित

10 डॉ.रामदरश मिश्र /जाना एक धरती पुत्र का

16 अमन कुमार त्यागी/डॉ.विवेकी राय : व्यक्तित्व और कृतित्व

23 पी.एन.सिंह/विवेकी राय की काव्य-यात्रा

28 मान्धाता राय/निश्छल व्यक्तित्व के धनी डॉ.विवेकी राय

32 डॉ.आनंद कुमार सिंह/विवेकी राय : ग्राम-जीवन-दृष्टि के वैश्विक कथा-पुरुष-संस्मृति और मूल्यांकन

43 डॉ.महेंद्रनाथ राय/'बड़ा वह आदमी जो जिंदगी भर काम करता है'

47 डॉ.बुद्धिनाथ मिश्र/साहित्य में गाँव की वह फगुनहट!

50 लाल जी राय/साहित्य के ऋषि डॉ.विवेकी राय

55 ओम प्रकाश चौबे *'ओम धीरज'*/गँवई गंध का गुलाब : डॉ.विवेकी राय

58 डॉ.वेदप्रकाश अमिताभ/विवेकी राय का कविता संसार:गहन अनुभूति और सहज अभिव्यक्ति की संश्लिष्टता

65 डॉ.नर्मदा प्रसाद उपाध्याय/विवेकी राय : साहित्य के 'मंगल भवन'

68 डॉ.चंद्रशेखर तिवारी/अंतिम दिनों में विवेकी राय और 'सोनामाटी'

81 डॉ.अरविंद कुमार सिंह/अनाथ हो गई सोनामाटी

86 डॉ.श्रीपति कुमार यादव/एक किसान कलम का जाना

88 डॉ.आद्याप्रसाद द्विवेदी/मीठी यादों की भीनी सुगंध में डूबे : विवेकी राय जी

91 डॉ.राजेश चंद्र पाण्डेय/विवेकी राय का कथा साहित्य : समग्र विश्लेषण

97 डॉ.सूर्यकांत त्रिपाठी/यादों के आईने में 'विवेकी राय'

यादों के आईने में 'विवेकी राय'

डॉ.सूर्यकांत त्रिपाठी

स्वर्गीय विवेकी राय जनपद गाजीपुर के सोनवानी गाँव में 19 नवंबर सन् 1924 में पैदा हुए। उनकी जिंदगी का सफर बड़ा ही ऊबड़-खाबड़ था। कठिन संघर्ष के बीच उन्होंने अपनी सारस्वत साधना का बखूबी निर्वाह किया। मिडिल पास करके प्राइमरी के मास्टर बन गए। हाईस्कूल, इंटर, बी.ए., एम.ए. सभी प्राइवेट किए और उसी क्रम से अपने अध्यापन का दर्जा भी बढ़ाते गए। 1970 में उन्होंने काशी विद्यापीठ से पी-एच.डी. की उपाधि प्राप्त की और वे हिंदी विभाग, काशी विद्यापीठ के प्रथम शोधार्थी रहे। अध्ययन, अध्यापन और लेखन ही उनका व्यसन था।

शुरुआती दौर में उन्होंने जनता की भावनाओं को जगाने के लिए हस्तलिखित समाचार 'श्वेतपत्र' का संपादन किया। 1942 ई. के आंदोलन में तकरीबन एक साल तक गुप्त रूप से बुलेटिन तैयार करते फिर गाँव-गाँव पहुँचाते हुए आंदोलन की चिनगरी को हवा देते रहे। पूर्वी उत्तरप्रदेश के एक समाचार पत्र में छपनेवाली 'मनबोध मास्टर की डायरी' और 'चतुरी चाचा की चिट्ठी' जैसे स्तंभ के कारण वे भोजपुरी जनमानस पर बहुत समय तक छाए रहे। उन्होंने पच्चीस से अधिक पुस्तकें लिखीं, किंतु प्रचार की कहीं कोई वांछा नहीं।

उन्होंने भोजपुरी के अतिरिक्त हिंदी में कविता, उपन्यास, कहानी, निबंध प्रभृति मात्रा में लिखा। लेकिन भोजपुरी से जो ख्याति उन्हें मिली, उसके वह सदैव एहसानमंद रहे। हिंदी में उनकी प्रतिष्ठा 'सोनामाटी' उपन्यास की वजह से है, जिसे कई सम्मान व पुरस्कार प्राप्त हो चुके हैं। ललित निबंधकारों में आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, पं.विद्यानिवास मिश्र, शिवप्रसाद सिंह, कुबेरनाथ राय और ... सभी दिग्गज हैं। पर विवेकी राय कुछ अलग दिखते हैं। उनका अंदाजे-बयां ही कुछ और है जो सभी को भाता है, चाहे वे गंवई या फिर नगरीय पाठक ही क्यों न हों।

गाँव से उनका बड़ा जुड़ाव था। लगाव था। उन्होंने अपने गाजीपुर के आवास का नाम ही 'गंवई गंध गुलाब' रख लिया था। उनके साहित्य के केंद्र में अथ से इति तक गाँव है जिसमें उन्होंने बड़ी सजीवता के साथ गंवई परिदृश्य का चित्र उकेरा है। जहाँ लोग संस्कृत की उस उक्ति 'मूर्खत्वं यदि वांच्छेत् ग्रामे दिनत्रयं वसेत्' (यदि मूर्खता की इच्छा रखते हो तो गाँव में तीन दिनों तक रहो) का हवाला देते हुए गाँव से बिदकते हैं और 'गंवार' का सीधा अर्थ (गाँव का रहने वाला) न लेकर उसका अर्थादेश 'मूर्ख' ही लेते हैं, वहीं विवेकी राय का गाँव से अटूट रिश्ता था। नाता था। छोह था। मोह था। उनकी रचनाओं में आंचलिकता का पुट है जिसे वह सहर्ष स्वीकारते रहे। डॉ.रामदरश मिश्र उन्हें इसी वजह से 'किसान लेखक' की संज्ञा से अभिहित करते हैं। उनकी कृति 'गंवई गंध गुलाब' के बारे में पं.विद्यानिवास मिश्र का अभिमत है-"उनमें जो 'सद्यः सीरोत्कर्षण सुरभि' (ताजा जुते खेत की महक) है, उसके ऊपर गुलाब हजार बार वारे जाएँ।"